

## “सोह-शांग” पूर्वोत्तर भारत का एक संभावित फल

संजीव कुमार सिंह<sup>1</sup> एवं रनबीर सिंह राठी<sup>1</sup>

“सोह-शांग” पूर्वोत्तर भारत में व्यावसायिक तौर पर खेती के लिए पहचान किए गए संभावित फलों में से एक प्रमुख फल है। इसका वानस्पतिक नाम *italics* जो कि “एलिगेनेसी” कुल का तेजी से बढ़ने वाला झाड़ीनुमा पौधा है। इस पौधे को क्षेत्रीय भाषाओं में भिन्न भिन्न नामों से जाना जाता है परन्तु मेघालय राज्य की स्थानीय भाषा (खासी ) में इसे “सोह-शांग” और में अंग्रेजी वाइल्ड-ओलेस्टर कहते हैं। इसकी उत्पत्ति का केंद्र दक्षिण एशिया माना गया है परन्तु भारत वर्ष में यह पौधा पूर्वोत्तर राज्यों के आलावा पश्चिमी हिमालय एवं पश्चिमी घाट के क्षेत्रों में भी पाया जाता है। पूर्वोत्तर राज्यों में यह लगभग 1000 से 1500 मी समुद्र तल की ऊँचाई तक वाले स्थानों में पाया जाता है। भारतवर्ष में इसकी कुछ जंगली प्रजातियाँ भी पाई जाती हैं जिनके फल आकार में कुछ छोटे होते हैं। पूर्वोत्तर भारत में यह मुख्यतः घरों के आसपास एवं सजावटी पौधों के रूप में उगाया जाता है।

सोह-शांग की झाड़ी देखने में बहुत ही सुन्दर लगती है जो की फलों के पकने के बाद अति सुन्दर दिखने लगती है। इसका फल विटामिन-सी का एक मुख्य स्रोत होने के कारण इसे भिन्न प्रकार से खाने के रूप में उपयोग लाया जाता है।

### वानस्पतिक विवरण

सोह-शांग का पौधा लगभग 6 से 8 मी की ऊँचाई लिये घनी शाखाओं वाली एवं काँटों युक्त सदाबहार झाड़ी है लेकिन कभी-कभी ये 15 मी तक भी लता के रूप में भी पाया जाता है(चित्र संख्या-1)। इसके फूल छोटे व उभयलिंगी होते हैं जिनमें परागण मुख्यतः मधुमक्खियों द्वारा होता है। इसकी जड़ों में बैक्टीरिया पाया जाता है जो कि पर्यावरण की

नाइट्रोजन को एकत्रित कर मृदा को आवश्यक मात्रा में नाइट्रोजन प्रदान करता है। इसलिए इसका पौधा नाइट्रोजन की कमी वाली मृदा में भी आसानी से उगाया जा सकता है। इसके फल हल्के गुलाबी रंग से लेकर गहरे गुलाबी रंग तक के होते हैं (चित्र संख्या-2)।

### पौध तैयार करना

पूर्वोत्तर भारत के राज्यों में सोह-शांग के पौधे को बीज एवं कटिंग विधि के द्वारा बरसात के मौसम में तैयार किया जाता है। इसकी पौध लगाने का उचित समय जून से जुलाई माह तक होता है। बीजों द्वारा इसका पौधा बनाने के लिये अच्छी तरह पके हुए फलों का चयन करके गुठली अथवा बीज को निकाल लिया जाता है तथा एक सप्ताह के अन्दर ही मृदा में बीजारोपण कर दिया जाता है क्योंकि इसके बीज बहुत जल्दी ही अंकुरण छमता खो देते हैं। अतः इस विधि द्वारा 15 से 20 दिनों में पौधा मृदा से बाहर आ जाता है। इस प्रकार जब इसका पौधा 40 -50 दिन का हो जाए तो उसे जमीन में रोप देना चाहिए। कटिंग विधि द्वारा तैयार करने के लिए सर्वप्रथम स्वस्थ शाखा का चयन करके उसमें से 8-10 इन्च लम्बी कटिंग काटकर उन्हें पहले से तैयार पौधशाला में या पौली बैग में लगा देना चाहिये। कटिंग को पौधशाला में या पौली बैग में लगाने के पश्चात् यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि मृदा में जरूरी नमी बनी रहे। इस प्रकार लगायी गयी कटिंगों से लगभग 15-20 दिनों के अंदर कलियाँ निकलनी आरम्भ हो जाती हैं तथा यह कटिंग लगभग 3-4 महीने के पश्चात् मुख्य खेत में लगाने योग्य हो जाती हैं। इस समय इन पौधों में नमी बनाए रखने के लिए समय-समय पर सिंचाई करते रहना आवश्यक होता है।

<sup>1</sup>भाकृअप - राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो

### बीमारियाँ एवं बचाव

सोह-शांग का पौधा बहुत ही कठोर प्रवर्ती वाला होता है तथा सामान्यतः इसमें कोई भी बीमारी नहीं लगती। परंतु कभी-कभी इसके पके हुए फलों में फल भेदक का प्रकोप पाया गया है जिसकी रोकथाम के लिए फल आने से पहले (जब लगभग फूल से फल बनते हैं) एन्डोसलफान का घोल 2 मिली/ली. के अनुपात में पानी के साथ मिलाकर सभी पौधों पर छिड़काव करने से इसकी हानि को रोका जा सकता है।

### उपयोग

भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में इस पौधे पर फूल नवम्बर माह से प्रारम्भ होकर दिसम्बर माह तक रहते हैं और फल मार्च से अप्रैल माह के दौरान पक कर तैयार हो जाते हैं। इस तरह लगभग 2 साल के पौधे पर फल आने शुरू हो जाते हैं। उत्तर-पूर्वी राज्यों के बाजारों में इसके फल अप्रैल माह के दौरान बिक्री के लिए उपलब्ध होते हैं। यहाँ के स्थानीय निवासी फलों को नमक के साथ बड़े स्वाद से खाते हैं। इसके पके हुए फल स्वाद में खट्टे होते हैं तथा इनसे जेम, जेली, शरबत एवं स्वकैश भी तैयार किया जाता है जो कि स्थानीय बाजारों में बिक्री भी किया जाता है। इसके फलों में विटामिन सी एवं अन्य मिनरल जैसे कि कैल्शियम, मैग्नीशियम एवं लोह तत्व आदि प्रचुर मात्रा

में पाए जाते हैं इसी कारण यह एक स्वास्थ्यवर्धक फल माना जाता है (विश्लेषण तालिका संख्या-1)। आज के समय में जब पूर्वोत्तर राज्यों के क्षेत्रों में सड़कों एवं मार्गों का विकास होने के कारण सभी आदिवासी किसान बाजारों से भलीभांति जुड़े हैं जिससे कि वे अपनी फल की पैदावार को बाजार तक भी ले जाने में भी सक्षम हैं। इसी कारण यह फल उनकी जीविका को उत्तम प्रकार से चलाने का माध्यम भी बन रहा है और किसानों की आय में भी वृद्धि कर पा रहा है।

### जननद्रव्यों का संकलन एवं संरक्षण

भाकृअनुप-राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो द्वारा इस पौधे के अब तक लगभग 30 नमूने मेघालय, असम, उत्तराखंड, अरुणाचल प्रदेश व कुछ अन्य प्रजातियाँ जम्मू एवं कश्मीर से एकत्र करके भारतीय जीन बैंक में संरक्षित की गई हैं। लेकिन एक महत्वपूर्ण पौधा होने के कारण इसके और अधिक जननद्रव्यों को एकत्र करने की आवश्यकता है तथा इस पर और अधिक शोध करने एवं मूल्यांकन करने पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है। साथ ही साथ इसके एकत्रित जननद्रव्यों का मूल्यांकन करने के पश्चात् गुणवत्तावान एक्कसेशनों को देश के अन्य संभावित क्षेत्रों में खेती के लिए लगाना चाहिए ताकि यह फल भिन्न-भिन्न प्रकार जैसे जेम, जेली व आचार तथा अन्य प्रोडक्ट बनाने में उपयोग में लाया जा सके।

**तालिका संख्या-1: सोह-शांग के फलों के अर्क का फाइटोकेमिकल संरचना विश्लेषण**

ज़रूरी पोषक तत्व	मानक
कैल्शियम	46.670.77
पोटेशियम	610.134.99
फासफोरस	228.995.87
सोडियम	5.580.20
मैग्नीशियम	42.820.38

मेगनीज	5.840.26
आयरन	17.270.46
कोपर	2.590.03
जिंक	0.250.00



चित्र संख्या-1: सोहशांग का पौधा- लता के रूप में



चित्र संख्या-2: सोहशांग- के फल एवं पत्ती

स्रोत: खशती दासिला और मिथिलेश सिंह (2022) साउथ अफ्रीकन जर्नल ऑफ़ बॉटनी, 145

### हरिवंश राय बच्चन



हरिवंश राय बच्चन जी का जन्म 27 नवम्बर 1907 में उत्तर प्रदेश के कुम्भनगरी प्रयागराज (इलाहाबाद) में हुआ था। इनके पिता का नाम प्रताप नारायण श्रीवास्तव व माता का नाम सरस्वती देवी था। हिन्दी भाषा के एक प्रसिद्ध कवि और लेखक रहे श्री बच्चनजी हिन्दी कविता के उत्तर छायावाद काल के प्रमुख कवियों में से एक थे। इनकी सबसे प्रसिद्ध कृति मधुशाला है। उनकी मृत्यु 18 जनवरी 2003 में साँस की बीमारी की वजह से मुम्बई में हुई थी। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अंग्रेजी का अध्यापन किया। बाद में भारत

सरकार के विदेश मंत्रालय में हिन्दी विशेषज्ञ रहे। वे राज्य सभा के मनोनीत सदस्य रहे। बच्चन जी की गिनती हिन्दी के सर्वाधिक लोकप्रिय कवियों में होती है।

कविता संग्रह- तेरा हार, मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, आत्म परिचय